International Journal for Multidisciplinary Research(IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com● Email: editor@ijfmr.com

मलयालम उपन्यासों में दलित चेतना

डॉ. अपर्णा.यू.नायर

असिस्टेंट प्रोफसर, हिन्दी विभाग, , सेंट सेवियेस् कॉलेज , वैक्कम

"दलित साहित्य वह साहित्य है , जो दलितों के जीवन विषयक यथार्थवादी पृष्ठभूमि पर लिखा गया हो, जिसमें मानवीय संवेदनाएँ सहज एवं स्वाभाविक रूप से अभिव्यक्ति पाती है, जो दलित जीवन या उपेक्षितों की सच्ची जीवन - गाथा को प्रतिबिंबित कराता हो।"1

दलित सब से पहले महाराष्ट्रा में एकत्र हुए। उनका आन्दोलन व्यापक और आक्रमक हुआ। मराठी के दलित आन्दोलन में माक्र्स और आम्बेडकर की सामाजिक परिकल्पना को एक सत्य प्रेरक निगाह से देखने वालों का एक बडा समूह था। कालान्तर में आन्दोलन बिखर गया। बिखरने के बावजूद भारतीय समाज में न केवल आलोचना की पहचान बनी, तथा अन्य भारतीय भाषाओं में दलित लेखक उत्प्रेरित हुए। इसी क्रम में हिन्दी, पंजाबी, बंगला, तमिल, मलयालम, कन्नडा, तेलगू आदि भाषाओं में मराठी से उत्प्रेरित दलित आंदोलन छोटी-बडी सीमाओं में सक्रिय है।

दलित साहित्य को विद्रोही साहित्य के रूप में देखने की भूमिका सर्व प्रथम बाबुराव बागुल ने ही अपनायी। सर्व साधारण श्रमजीवी वर्ग से अछूत एवं दलित वर्ग के जीवनानुभव अलग होने के कारण दलित चेतना, दलित संवेदना, दलित अनुभव आदि की अपने ही ढंग से परिभाषा करने के प्रयास बाबुराव बागुल करते रहे। उन्होंने स्वयं एक सशक्त कहानीकार और उपन्यासकार की भूमिका निभायी है।

मलयालम में दलित कथा साहित्य का विकास उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में होता है। निरणम ए.पी. केशवन शास्त्री की कहानी इस संदर्भ में विशेष रूप से उल्लेखनीय है। बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न टी.के. चातन वडुतला के आगमन से ही मलयालम दलित कथा साहित्य पूर्ण रूप से अस्तित्व में आया है। शिक्षा प्राप्त दलित युवा पीढी के मोह भंग, उच्च वर्ग के हाथों उत्पीडन आदि समस्याओं को पूर्ण रूप से दलित सौंदर्य बोध के

साथ उन्होंने प्रस्तुत किया है। दलितों का धर्म परिवर्तन आज के समान तब भी एक ज्वलन्त समस्या थी। "प्रसिडन्डिन्टे सन्देशम' में इस समस्या की ओर इशारा किया गया है। "चंगलकल मुरुकुन्नु' उनका प्रसिद्ध उपन्यास है। जमींदारों द्वारा किए गए अत्याचार , अस्पृश्यता तथा जाति विरोध इसका विषय है। लेखक का मानना है कि हमारी सामाजिक संरचना में बुनियादी परिवर्तन लाये बिना जाति उन्मूलन संभव नहीं है। "चीता ', "कण्टन कोरन', "तेवन' "चक्की', "वल्लोन', "कोच्चु कुरुम्पी', आदि पात्रों के माध्यम से दलित भाषा , संगीत और संस्कृति की अस्मिता को निजता और असलियत के साथ वडुतलाजी ने प्रस्तुत किया है। उनके "पुलयत्तरा' नामक उपन्यास पूर्ण रूप से पुलय जाति पर केन्द्रित है।

डी. राजन प्रसिद्ध वाग्मी है और कथकार है। "मक्कुण्णी' उपन्यास में भी दलितों की संस्कृति और जीवनानुभवों का विशद चित्रण हुआ है। राजनजी ने कहा है कि "हर आदमी के शरीर में ोताणु और शोणणु रहती है , लेकिन दलितों के शरीर में तीन अणु है तीसरा अणु है - "अंबेडकर कोर्पसिल्स"। 2 अंबेडकर के सिद्धान्तों से परिचित एवं प्रभावित राजनजी अपनी रचनाओं के माध्यम से दलित क्रांति की पृष्ठभूमि तैयार कर रहे थे।

1998 में प्रकाशित नारायन का "कोच्चरयत्ति ' उपन्यास केरल के आदिवासियों के जीवन पर आधारित पहला उपन्यास है। आदिवासी होने के कारण नारायनजी को आदिवासी जीवन के साथ नाभि - नाल संबन्ध है। उनके "ऊरालि कुडि ' भी एक प्रसिद्ध उपन्यास है।

पी. वत्सला मलयालम में दलितों के जीवन में स्त्री की हैसियत साबित करनेवाली लेखिका है। वयनाड के तिरुनेल्ली और आसपास के पहाडी की जिन्दगी, जंगलों में ठेले गये और वहाँ से खदेडे जा रहे "काडर' के जीवन मूल्यों का, उनके शोषण का यथार्थ "नेल्लु' में चित्रित है। 2000 में प्रकाशित कूमन कोल्ली ' में कुरिच्यर जनजाति के जीवन का यथार्थ चित्रण मिलता है।

अतः निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि आज के बदलते परिवेश के अनुसार मलयालम के दलित कथाकार भी भेद भाव के खिलाफ , तथाकथित सामाजिक व्यवस्था

और वर्णभेद के खिलाफ लिख रहा है। वे नये सौंदर्य शास्त्र के साथ नई दलित चेतना का वाहक बनना चाहते हैं।

संदर्भ

1. राजभाषा भारती - (सं) रमेशबाबू अणियेरी, जनवरी - मार्च 2010, पृ. 24.

2. भारतीय दलित साहित्य - पुन्नीसिंह, पृ. 392

आधार ग्रंथ सूची

1. दलित चिन्तन के विविध आयाम - अ. ला. ऊके, प्र. स. 2008, शिल्पयान पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, 110032.

2. दलित जीवन की कहानियाँ - गिरिराज शरण , प्र. स. 1986, प्रभात प्रकाशन, चावडी बाजार दिल्ली.